VP SEPT-OCT 2016 FINAL:JULY-AUGUST 2014.qxd 9/28/2016 4:19 PM Page 30

संदर्भ

बुलेट ट्रेन के सपने का सच!

■ सोनी कुमारी

बात 2014 के अगस्त महीने की है। केंद्र में नई सरकार को बने कायदे से उतने भी दिन नहीं हुए थे जितने दिन में नई दुल्हन के हाथ की मेहंदी का रंग उतरता है। काशी को क्योटो बनाने और सौ दिन के भीतर कालाधन विदेश से लाकर सबके खाते में 15-15 लाख पहुंचाने जैसी घनघोर चुनावी गर्जनाएं बंद हो गई थीं तो भी मतदाताओं के कानों में उनकी गूंज बाकी थी। देश के नये प्रधानमंत्री भारत के नव-निर्माण की भाषा बोल रहे थे। उनके साथ सेल्फी खिंचवाने के लिए आपस में धक्का-मुक्की कर चुका पत्रकार-समुदाय अब एक नई प्रतिस्पर्धा में जुटा था। प्रतिस्पर्धा यह चल रही थी कि प्रधानमंत्री के नव-निर्माणी बोलों पर कौन पत्रकार कितनी जोर से ताली बजाता है।

ऐसे ही माहौल में अगस्त के महीने में प्रधानमंत्री जापान पहुंचे। प्रधानमंत्री के पीछे-पीछे ताली पीटुआ वाला पत्रकार समुदाय भी पहुंचा। जापान-यात्रा की रिपोर्टिंग करने पहुंचे इस पत्रकार समुदाय में से हिंदी टीवी चैनल का एक रिपोर्टर बाकियों की तुलना में तनिक ज्यादा ही हवा के घोड़ों पर सवार था। वह जापान में चलने वाली बुलेट ट्रेन में बैठकर प्रधानमंत्री की इस यात्रा का महत्व बता रहा है। कह रहा था कि- 'भारत का लोकमानस बुलेट ट्रेन के स्वप्न को साकार करना चाहता है।'

अगर आपको 'बुलेट ट्रेन' सरीखे अंग्रेजी के शब्द के प्रयोग से परहेज ना हो तो फिर व्याकरण के हिसाब से पत्रकार के मुंह से निकला हुआ यह वाक्य दुरुस्त ही कहलाएगा। लेकिन व्याकरण के हिसाब से दुरुस्त जान पड़ने वाला हर वाक्य सार्थक भी हो, यह जरुरी नहीं! सोचिए, पत्रकार के मुंह से निकले इस वाक्य में भारत शब्द का क्या अर्थ है? क्या यह सवा अरब की आबादी वाला भारत है?

वे कौन लोग हैं, कौन है वह 'लोक' जिसकी आंखों में बुलेट ट्रेन के स्वप्न पल रहे हैं। बुलेट ट्रेन की उम्मीदों से भरी आंखों की तादाद इस देश में कितनी है? सपने भी हैसियत की नाप-जोख के हिसाब से आते हैं।

अगर यह सवा अरब की आबादी वाला भारत है तो फिर इस भारत में कितने लोग हैं जिनकी जेब इतनी बड़ी है कि 60 हजार करोड़ की कीमत वाले बुलेट ट्रेन का टिकट उसमें समा सके? जापान में बुलेट ट्रेन से 500 किलोमीटर की यात्रा के लिए आपको छह हजार रुपये चुकाने पड़ते हैं। सवा अरब की आबादी वाले भारत में एक यात्रा पर एक झटके में छह हजार रुपये खर्च कर सकने की क्षमता और जरुरत वाले लोग कितने हैं?

आईए, कुछ अनुमान लगाते हैं। जनगणना के नवीनतम आंकड़ों के हिसाब से देखें तो देश की कुल आबादी में महज 4.6 प्रतिशत लोग जरुरत और जेब से इस काबिल हैं कि उनके घर में देखने के लिए टीवी, पढ़ने के लिए कंप्यूटर चलने के लिए स्कूटर या कार और बोलने-बतियाने के लिए टेलीफोन या मोबाइल एक साथ मौजूद है। अपनी क्रयशक्ति के बूते उपभोग की इस ऊंचाई तक पहुंचे व्यक्ति

VP SEPT-OCT 2016 FINAL:JULY-AUGUST 2014.qxd 9/28/2016 4:19 PM Page 31

के बारे में यकीनी तौर पर माना जा सकता है कि वह अपनी जरूरतों को आगे और विस्तार देने के लिए बुलेट-ट्रेन की सवारी गांठना चाहेगा।

तुरंता पूंजी और उड़ंता निवेश में यकीन करने वाले आबादी के इस छोटे-से हिस्से के लिए ही अजब-गजब नामों वाली कंपनियां हवाई जहाज उड़ाया करती हैं। गाहे-बिगाहे हवाई उड़ान भरने में सक्षम यह आबादी जरूर चाहेगी कि जिस रफ्तार से वह आकाश लांघती है उसी रफ्तार से धरती भी लांघे। तो क्या प्रधानमंत्री की जापान-यात्रा की रिपोर्टिंग कर रहा पत्रकार सवा अरब लोगों में से मात्र पांच-छह करोड़ लोगों की जरुरत और स्वप्न के बारे में बात कर रहा था? लेकिन तब अपनी बात में भारत शब्द का प्रयोग किया। क्या उस पत्रकार की नजर में शेष भारत अपनी साढ़े चार प्रतिशत आबादी के सपनों का बोझ ढोने वाला एक भारवाहक मात्र है ?

जरा ठहरें, पत्रकार पर आरोप लगाने से पहले यह भी देखें कि उसने बुलेट ट्रेन को भारत के 'लोकमानस का स्वप्न' कहा था। बहुधा 'स्वप्न' शब्द का इस्तेमाल अपनी बातचीत में हम उम्मीद के अर्थ में करते हैं। उम्मीदों का आकाश हकीकत की जमीन से बहुत बड़ा होता है। देश के साढ़े चार फीसदी आबादी के लिए बुलेट ट्रेन एक विलंबित सच्चाई है, तनिक प्रतीक्षा के बाद इसे घटित होना है।

तो फिर वे कौन लोग हैं, कौन है वह 'लोक' जिसकी आंखों में बुलेट ट्रेन के स्वप्न पल रहे हैं। बुलेट ट्रेन की उम्मीदों से भरी आंखों की तादाद इस देश में कितनी है? सपने भी हैसियत की नाप-जोख के हिसाब से आते हैं। उनका आसमान हकीकत की जमीन की नाप के हिसाब से ही बड़ा होता है। इसी कारण 'स्वप्न' और 'दिवास्वप्न' में फर्क किया जाता है।

देश की तकरीबन 45 प्रतिशत आबादी अपने रोजमर्रा के काम के लिए साइकिल पर निकलती है। बुलेट ट्रेन की उम्मीद उसके लिए दिवास्वप्न की श्रेणी में आएगी। देश की तकरीबन 18 प्रतिशत आबादी जिसके पास साइकिल, स्कूटर, कार, स्कूटर, कंप्यूटर, मोबाइल फोन, टीवी, रेडियो में से कुछ भी नहीं है, उसके लिए भी

बुलेट ट्रेन को लेकर उम्मीद पालना दिवास्वप्न कहलाएगा।

बुलेट ट्रेन के सपने या तो वह 9 प्रतिशत आबादी पाल सकती है जिसने कंप्यूटर खरीद लिया है या फिर हद से हद 21 प्रतिशत की तादाद में मौजूद वह आबादी जिसकी जेब की गहराई इतनी है कि आज स्कूटर-मोटरसाइकिल की सवारी गांठती है। तो क्या जापान पहुंचा वह पत्रकार कुल 21 प्रतिशत लोगों के स्वप्न को पूरे भारत का स्वप्न बता रहा था? पत्रकार का भारत इतना छोटा कैसे हो गया जिसमें सिर्फ 21 प्रतिशत आबादी के सपने समा सकते हैं?

दरअसल प्रधानमंत्री की जापान-यात्रा की रिपोर्टिंग करने पहुंचा हिंदी टीवी चैनल का पत्रकार अपने दर्शकों के साथ छल कर रहा था। छल एक छोटे से भारत को पूरा भारत कहने का, छल मुट्ठी भर लोगों के सपनों का भार पूरे देश पर लादने का, छल उस लोकमानस को छुपाने का जो रेल को परदेसी पिया से जोड़कर 'बैरन' मानता आया है।

किसी समाज के भ्रष्ट होने के संकेत सबसे पहले उसकी भाषा से मिलते हैं। भ्रष्ट समाज का आलोचनात्मक विवेक मर जाता है। आलोचना का विवेक मर जाय तो शब्द अपने अर्थ के तमाम प्रसंगों को छोड़कर मुक्त-प्रवाह में बहने लगते हैं। फिर यह जान पाना मुश्किल हो जाता है कि कोई व्यक्ति मुंह से थूक फेंक रहा है या शब्द उगल रहा है। टीवी चैनल के उस पत्रकार के साथ यही हुआ था।■

किसी समाज के भ्रष्ट होने के संकेत सबसे पहले उसकी भाषा से मिलते हैं। भ्रष्ट समाज का आलोचनात्मक विवेक मर जाता है। आलोचना का विवेक मर जाय तो शब्द अपने अर्थ के तमाम प्रसंगों को छोड़कर मुक्त-प्रवाह में बहने लगते हैं। फिर यह जान पाना मुश्किल हो जाता है कि कोई व्यक्ति मुंह से थूक फेंक रहा है या शब्द उगल रहा है।